राहुल-जननी

मैथिली शरण गुप्त

कवि परिचय :

मैथिली शरण गुप्त का जन्म सन् 1886 ई. में झाँसी के चिरगाँव में हुआ था । उनके पिता सेठ रामचरणजी वैष्णव भक्त एवं अच्छे कवि थे । इसलिए राम-भक्ति गुप्तजी को पैतृक देन के रूप में मिली । बचपन से ही वे काव्य-रचना करने लगे । वे द्विवेदी-युग के प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं । वे गांधीवादी और भक्त कवि हैं । उनकी रचनाओं में राष्ट्रीय भावनाओं की अभिव्यक्ति मिलती है । अपनी रचनाओं के जरिये उन्होंने जनता को अहिंसा, सत्याग्रह, राष्ट्र-प्रेम तथा मानवतावाद का संदेश दिया । इसलिए उन्हें 'राष्ट्रकवि' सम्मान से सम्मानित किया गया । आगरा विश्वविद्यालय तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने उन्हें डी. लिट. की मानद उपाधि प्रदान की । वे भारत के राष्ट्रपति के द्वारा मनोनीत राज्यसभा सांसद भी रहे । उनका निधन सन् 1964 ई. में हुआ ।

उनकी प्रमुख काव्य-रचनाएँ ये हैं : जयद्रथ-वध, भारत-भारती, पंचवटी, साकेत, यशोधरा, द्वापर, जयभारत, विष्णुप्रिया आदि ।

भाव-बोध :

ये दो पद 'यशोधरा' खंडकाव्य के 'राहुल-जननी' शीर्षक से लिये गये हैं । इनमें गुप्तजी ने यशोधरा के माता रूप और पत्नीरूप का उद्‌घाटन किया है ।

नेपाल राजकुमार गौतम मानव-जीवन के शाश्वत सत्य की खोज में क्षणभंगुर संसार को त्याग देते हैं । पत्नी यशोधरा और पुत्र राहुल को बिना जगाए और बिना कुछ

बताए रात को ही निकल जाते हैं । सुबह यशोधरा को यह पता चलता है । वह बहुत दु:खी होती है । कुछ देर बाद राहुल जाग पड़ता है और रोने लगता है । यशोधरा उसे चुप कराती हुई कहती है- 'रे अभागे ! तू अब क्यों रो रहा है ? चुप हो जा । उनके जाते वक्त अगर तू रोता तो वे मुझे सोती छोड़कर क्यों चले जाते ? हम दोनों ने तो सोकर उन्हें खो दिया । अब रोने से क्या फायदा ? राहुल को और समझाती हुई यशोधरा कहती है 'बेटे ! मेरे भाग्य में रोना तो लिखा है । मैं रोऊँगी । तेरे सारे कष्ट मिटाऊँगी । तू क्यों रोता है ? तू हँसा कर । हमारे जीवन में जो कुछ आएगा, उसे सहना ही पड़ेगा । हमारे सुख के दिन अवश्य लौटेंगे । अब मैं तुझे अपना दूध पिलाकर और सारी स्नेह-ममता देकर पालूँगी । तेरे पिता के लिए आँसू बहाऊँगी । तुम दोनों के प्रति मुझे समान न्याय करना होगा । इसलिए पतिव्रता नारी बनकर मैंने पति की तरह सारे सुख-भोग त्याग दिये हैं ।

दूसरे पद में गुप्तजी ने पति वियोगिनी यशोधरा की मानसिक दशा का चित्रण किया है । यशोधरा के जरिये भारतीय नारी-जीवन की सच्चाई उपस्थापित की है । यशोधरा अपने अतीत और वर्तमान की तुलना करती है और कहती है कि जो कल इस राजमहल की रानी बनी हुई थी, वह आज दासी भी कहाँ है ? अर्थात् यशोधरा अपने आपको दासी से भी पराधीन मानती है । नारी जीवन की यही वास्तविकता है कि आँखों में आँसू भरकर भी दूसरों के लिए कर्त्तव्य का सम्पादन करती चले । अंत में यशोधरा कहती है- 'हे मेरे शिशु संसार राहुल ! तू मेरा दूध पीकर पलता चल और हे मेरे प्रभु (पतिदेव) ! तुम तो मेरे आँसू के पात्र हो ! इसे तुम स्वीकार करो ।'

(1)

चुप रह, चुप रह, हाय अभागे !
रोता है अब, किसके आगे ?

तुझे देख पाता वे रोता,
मुझे छोड़ जाते क्यों सोता ?
अब क्या होगा ? तब कुछ होता,

सोकर हम खोकर ही जागे !
चुप रह, चुप रह, हाय अभागे !

बेटा, मैं तो हूँ रोने को;
तेरे सारे मल धोने को;
हँस तू, है सब कुछ होने को,

भाग्य आयेंगे फिर भी भागे,
चुप रह, चुप रह, हाय अभागे !
तुझको क्षीर पिलाकर लूँगी,
नयन-नीर ही उनको दूँगी,
पर क्या पक्षपातिनी हूँगी ?

मैंने अपने सब रस त्यागे ।
चुप रह, चुप रह, हाय अभागे ।

(2)

चेरी भी वह आज कहाँ, कल थी जो रानी;
दानी प्रभु ने दिया उसे क्यों मन यह मानी ?
अबला-जीवन, हाय ! तुम्हारी यही कहानी-
आँचल में है दूध और आँखों में पानी !

मेरा शिशु-संसार वह
दूध पिये, परिपुष्ट हो ।
पानी के ही पात्र तुम
प्रभो, रुष्ट या तुष्ट हो ।

शब्दार्थ

अभागे - भाग्यहीन । मल धोने - दु:ख मिटाने । क्षीर - दूध । नयन-नीर - आँसू (दु:ख) । पक्षपातिनी- किसी एक का समर्थन करनेवाली । रस-सुख - आराम । चेरी - नौकरानी, दासी । अबला - कमज़ोर या दुर्बल स्त्री । परिपुष्ट - हृष्टपुष्ट । रुष्ट - नाराज, कुपित । तुष्ट - खुश, सन्तुष्ट ।

प्रश्न और अभ्यास

1. इन प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) राहुल को चुप कराने के लिए यशोधरा क्या कहती है ?

(ख) अबला जीवन की कहानी कैसी है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए :

(क) यशोधरा किसे अभागा कहती है ?

(ख) 'मैं तो हूँ रोने को' - यहाँ 'मैं' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?

(ग) यशोधरा क्या धोने की बात करती है ?

(घ) 'नयन-नीर' का अर्थ क्या है ?

(ङ) 'दानी-प्रभु' किसके लिए कहा गया है ?

(च) यशोधरा को कौन छोड़कर चले जाते हैं ?

(छ) 'नयन-नीर' ही उनको दूँगी' - यहाँ यशोधरा नयन-नीर किसे देने की बात करती है ?

3. खाली स्थान भरिए :

(क) ....., हाय ! तुम्हारी यही कहानी ।

(ख) सोकर हम ..... ही जागे ।

(ग) ..... भी वह आज कहाँ, कल थी जो ..... ।

(घ) मेरा ..... वह, दूध पिये, परिपुष्ट हो ।

भाषा - ज्ञान

1. विपरीत शब्द लिखिए :

रोता, सोता, खोकर, अभागा, अबला, रुष्ट

2. 'दानी प्रभु' में 'प्रभु' संज्ञा है और 'दानी' विशेषण । इस प्रकार निम्न वाक्यों में से संज्ञा और विशेषण छाँटिए :

(क) काली गाय का दूध मीठा होता है ।

(ख) बड़े बाजार में भीड़ लगी रहती है ।

(ग) पिताजी ने मुझे दो उपहार दिये ।

(घ) ऊँचे पेड़ पर दो बंदर बैठे हैं ।

3. प्रस्तुत पाठ में से तुकान्त शब्दों को छाँटकर लिखिए :

जैसे : अभागे - आगे ।

4. इन शब्दों से वाक्य बनाइए :

भाग्य, नयन, पानी, प्रभु, संसार

गृह कार्य

1. आप की माँ रोते बच्चे को कैसे चुप कराती हैं ? - लिखिए ।

1. गुप्त जी की दूसरी कविताओं को पढ़िए ।

●